[Free Vastu Shastra Ebook Downloads | Vaastu Books | Telugu ....85]

वाणी मद्य चर्म हाड पूले आदि तृण तुष (तुस) सांपकी चर्म अंगार ॥ ७८ ॥ कपास लवण कीच नपुंसक तेल औषध विष्ठा काले अन्न रोगी तैल आदिसे अभ्यक्त ॥ ७९ ॥ पतित जटाधारी उन्मत्त शिरमुण्डाये हुए (नंगे शिर) इन्धन विराव (खोटा शब्द) इनको तथा पक्षी मृग मनुष्य ॥ ८० ॥ इनके दो भेदोंको, बलती हुई दग्ध तथा जिनमें धूआँ उठ रहाहो उन दिशाओंमें देखता हुआ पुरुष जो गृहप्रवेश करे तो उसका मरण बुद्धिमान् मनुष्य कहे और उस भूमिमें दुःख कहे ॥८१॥ जिस मनुष्यको अपशकुन हों उस मनुष्यको दुःख होताहै इससे उस घरम

कार्पासलवणं पंकक्लीबतैलौषधानि च । पुरीषं कृष्णधान्यानि व्याधिताभ्यक्तमेव च ॥७९॥ पतितो जटिलोन्मत्तौ मुण्डी नग्न शिरस्तथा । इन्धनानि विरावं च द्विपक्षिमृगमानुषम् ॥ ८० ॥ ज्वालिताशासु दग्धासु धूमितासु च पश्यतः । मरणं निर्दिशेत् प्राज्ञस्तत्र शल्यं विनिर्दिशेत् ॥ ८१ ॥ यस्यापशकुनं तस्य शल्यं तत्र भवेद्गृहे । तत्र वासं न कुर्वीत गृहं चैव न कारयेत् ॥ ८२ ॥ अथ खननविधिः ॥ ज्योतिश्शास्त्रानुसारेण सुदिने शुभवासरे । सुलग्ने सुमुहूर्ते च सुस्नातः प्राङ्मुखो गृही ॥ ८३ ॥ पूजयेद्गणनाथश्च ग्रहांश्च कलशे स्थितान् । परीक्षिते च भूभागे गोमयेनानुलिप्य च ॥ ८४ ॥ तत्र संपूजयेद्विप्रान्दैवज्ञं च तथैव च । यावत्प्रमाणा भूर्ग्राह्या गृहार्थे तावता गृही ॥ ८५ ॥

वास न करे और न ऐसी भूमिमें घर बनावे ॥ ८२ ॥ अब खननकी विधिको कहते हैं कि, ज्योतिःशास्त्रके अनुसार शोभन दिन और शुभ वार सुन्दर लग्न और अच्छे मुहूर्तमें भलीप्रकार स्नान करके गृहस्थी पुरुष पूर्वको मुखकरके बैठे ॥ ८३ ॥ और फिर गणपति कलशके ऊपर स्थापन किये नवग्रह इनका पूजनकरे, फिर पूर्वोक्त प्रकारसे परीक्षा कीहुई उसी पृथ्वीमें किसी जगह गौके गोबरसे लीपे ॥ ८४ ॥ वहां ब्राह्मण और ज्योतिषीका पूजन करे, जितनी भूमिमें गृह बनाना हो उतनी भूमिको ॥ ८५ ॥ गृही पुरुष पंचगव्य सर्वौषधिका जल पंचामृत इनसे सींचे और फिर शुद्धिकी कामनासे भूसंस्कारोंको करे ॥ ८६ ॥ और उस जगह पूर्व सुवर्ण जिसके गर्भमें और फलोंसे युक्त समस्त धान्यों सहित तथा समस्त गन्ध और सर्वौषधिसहित ॥ ८७ ॥ पुष्पोंसे सुशोभित रक्त जिसका वर्ण वस्त्र जिसके ऊपर लिपटा हो मन्त्रोंसे अभिमंत्रित ऐसे घटका प्रथम स्थापन करके उसमें नवग्रह वरुण ॥ ८८ ॥ पर्वत वन कानन नदी नद कर्णिका और समुद्रोंसहित पृथ्वीका

पञ्चगव्यौषधिजलैस्तथा पञ्चामृतेन च । सेचयेच्छुद्धिकामेन भूसंस्कारांश्च कारयेत् ॥ ८६ ॥ तत्र कुम्भं निवेश्यादौ हेमगर्भं फलैर्युतम् । सर्वधान्ययुतं सर्वगन्धसर्वौषधैर्युतम् ॥ ८७ ॥ पुष्पान्वितं रक्तवर्णं सवस्त्रं मन्त्रमंत्रितम् । तस्मिन्नावाहयेत्खेटान् वरुणप्रमुखांस्तथा ॥ ८८ ॥ तस्मिन्नावाहयेद्भूमिं सशैलवनकाननाम् । नदीनदसमायुक्तां कर्णिकाभिश्च भूषिताम् ॥ ८९ ॥ सागरैर्वेष्टितां तत्र पूजयेत्प्रार्थयेत्ततः । दिक्पालान् कुलदेवीश्च देवान्यक्षांस्तथोरगान् ॥ ९० ॥ बलिं च दत्त्वा विधिवज्जलायेति जपेत्ततः । षडृचं रुद्रजापञ्च कारयेद्विधिपूर्वकम् ॥ ९१ ॥ तस्मिन्संपूजयेद्वास्तुं प्रार्थयेत्प्रजयेत्ततः ॥ ॐ नमो भगवते वास्तु पुरुषाय कपिलाय च ॥ ९२ ॥ पृथ्वीधराय देवाय प्रधानपुरुषाय च । सकलगृहप्रासादपुष्करोद्यानकर्मणि ॥ ९३ ॥

आवाहन करके ॥ ८९ ॥ पूजन करे दिक्पाल कुलदेवी देव यक्ष और उरग इनकी प्रार्थना कर और बलिको देकर 'जलाय' इस मन्त्रको जपे और षडृच और रुद्री इनका विधिपूर्वक जप करे ॥९०॥ ९१ ॥ फिर उसी घटमें वास्तुकी पूजा और प्रार्थना करे 'ॐनमोभगवते वास्तुपुरुषाय कपिलाय ॥ ९२ ॥ पृथ्वीधराय देवाय प्रधानपुरुषाय च' इसप्रकार कहकर नमस्कार करे और कहे कि, समस्त गृह महल पुष्कर उद्यान आदि

[Free Vastu Shastra Ebook Downloads | Vaastu Books | Telugu ....85](#)

Download
depositphotos
Image ID: 211427236
www.depositphotos.com

colegialas virgenes masturbandose Full

HD Online Player (life of pi telugu dubbed movie downl)

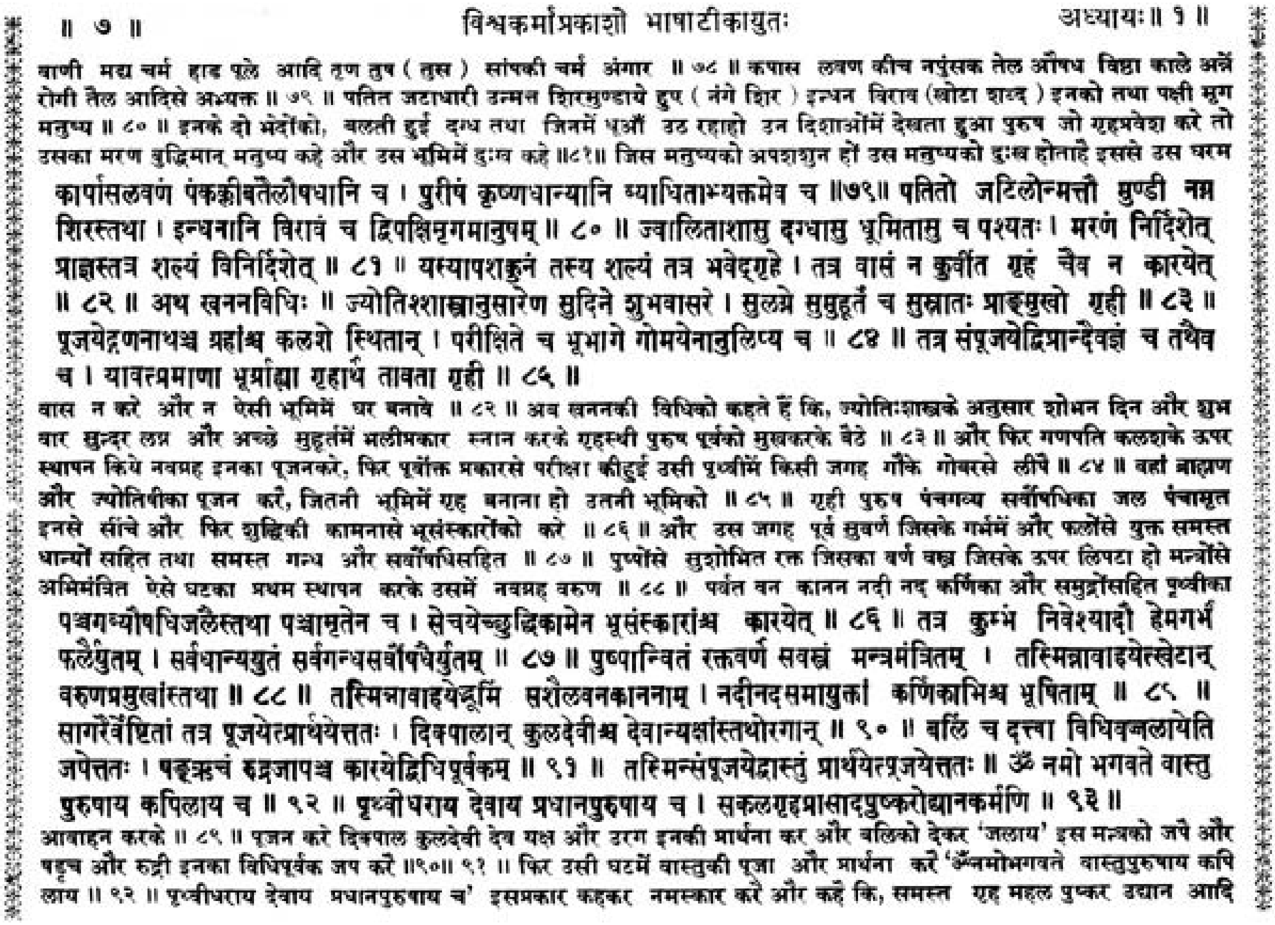

॥ ७ ॥ विश्वकर्माप्रकाशो भाषाटीकायुतः अध्यायः॥ १ ॥

वाणी मद्य चर्म हाड फूले आदि तृण तुष (तुस) सांपकी चर्म अंगार ॥ ७८ ॥ कपास लवण कीच नपुंसक तेल औषध विष्ठा काले अन्न रोगी तैल आदिसे अभ्यक्त ॥ ७९ ॥ पतित जटाधारी उन्मत्त शिरमुण्डाये हुए (नंगे शिर) इन्धन विराव (खोटा शब्द) इनको तथा पक्षी मृग मनुष्य ॥ ८० ॥ इनके दो भेदोंको, बलती हुई दग्ध तथा जिनमें धुआँ उठ रहाहो उन दिशाओंमें देखता हुआ पुरुष जो गृहप्रवेश करे तो उसका मरण बुद्धिमान् मनुष्य कहे और उस भूमिमें दुःख कहे ॥८१॥ जिस मनुष्यको अपशकुन हों उस मनुष्यको दुःख होताहै इससे उस घरमें

कार्पासलवणं पंकक्लीबतैलौषधानि च । पुरीषं कृष्णधान्यानि व्याधिताभ्यक्तमेव च ॥७९॥ पतितो जटिलोन्मत्तौ मुण्डी नग्नशिरस्तथा । इन्धनानि विरावं च द्विपक्षिमृगमानुषम् ॥ ८० ॥ ज्वालिताशासु दग्धासु धूमितासु च पश्यतः । मरणं निर्दिशेत् प्राज्ञस्तत्र शल्यं विनिर्दिशेत् ॥ ८१ ॥ यस्यापशकुनं तस्य शल्यं तत्र भवेद्गृहे । तत्र वासं न कुर्वीत गृहं चैव न कारयेत् ॥ ८२ ॥ अथ खननविधिः ॥ ज्योतिश्शास्त्रानुसारेण सुदिने शुभवासरे । सुलग्ने सुमुहूर्ते च सुस्नातः प्राङ्मुखो गृही ॥ ८३ ॥ पूजयेद्गणनाथश्च ग्रहांश्च कलशे स्थितान् । परीक्षिते च भूभागे गोमयेनानुलिप्य च ॥ ८४ ॥ तत्र संपूजयेद्विप्रान्दैवज्ञं च तथैव च । यावत्प्रमाणा भूर्ग्राह्या गृहार्थे तावता गृही ॥ ८५ ॥

वास न करे और न ऐसी भूमिमें घर बनावे ॥ ८२ ॥ अब खननकी विधिको कहते हैं कि, ज्योतिःशास्त्रके अनुसार शोभन दिन और शुभ वार सुन्दर लग्न और अच्छे मुहूर्तमें भलीप्रकार स्नान करके गृहस्थी पुरुष पूर्वको मुखकरके बैठे ॥ ८३ ॥ और फिर गणपति कलशके ऊपर स्थापन किये नवग्रह इनका पूजनकरे, फिर पूर्वोक्त प्रकारसे परीक्षा कीहुई उसी पृथ्वीमें किसी जगह गौके गोबरसे लीपे ॥ ८४ ॥ वहां ब्राह्मण और ज्योतिषीका पूजन करे, जितनी भूमिमें गृह बनाना हो उतनी भूमिको ॥ ८५ ॥ गृही पुरुष पंचगव्य सर्वौषधिका जल पंचामृत इनसे सींचे और फिर शुद्धिकी कामनासे भूसंस्कारोंको करे ॥ ८६ ॥ और उस जगह पूर्व सुवर्ण जिसके गर्भमें और फलोंसे युक्त समस्त धान्यों सहित तथा समस्त गन्ध और सर्वौषधिसहित ॥ ८७ ॥ पुष्पोंसे सुशोभित रक्त जिसका वर्ण वस्त्र जिसके ऊपर लिपटा हो मन्त्रोंसे अभिमंत्रित ऐसे घटका प्रथम स्थापन करके उसमें नवग्रह वरुण ॥ ८८ ॥ पर्वत वन कानन नदी नद कर्णिका और समुद्रोंसहित पृथ्वीका

पञ्चगव्यौषधिजलैस्तथा पञ्चामृतेन च । सेचयेच्छुद्धिकामेन भूसंस्कारांश्च कारयेत् ॥ ८६ ॥ तत्र कुम्भं निवेश्यादौ हेमगर्भं फलैर्युतम् । सर्वधान्ययुतं सर्वगन्धसर्वौषधैर्युतम् ॥ ८७ ॥ पुष्पान्वितं रक्तवर्णं सवस्त्रं मन्त्रमंत्रितम् । तस्मिन्नावाहयेत्खेटान् वरुणप्रमुखांस्तथा ॥ ८८ ॥ तस्मिन्नावाहयेद्भूमिं सशैलवनकाननाम् । नदीनदसमायुक्तां कर्णिकाभिश्च भूषिताम् ॥ ८९ ॥ सागरैर्वेष्टितां तत्र पूजयेत्प्रार्थयेत्ततः । दिक्पालान् कुलदेवीश्च देवान्यक्षांस्तथोरगान् ॥ ९० ॥ बलिं च दत्त्वा विधिवज्जलायेति जपेत्ततः । षडृचं रुद्रजापश्च कारयेद्विधिपूर्वकम् ॥ ९१ ॥ तस्मिन्संपूजयेद्वास्तुं प्रार्थयेत्प्रजयेत्ततः ॥ ॐ नमो भगवते वास्तुपुरुषाय कपिलाय च ॥ ९२ ॥ पृथ्वीधराय देवाय प्रधानपुरुषाय च । सकलगृहप्रासादपुष्करोद्यानकर्मणि ॥ ९३ ॥

आवाहन करके ॥ ८९ ॥ पूजन करे दिक्पाल कुलदेवी देव यक्ष और उरग इनकी प्रार्थना कर और बलिको देकर 'जलाय' इस मन्त्रको जपे और षडृच और रुद्री इनका विधिपूर्वक जप करे ॥९०॥ ९१ ॥ फिर उसी घटमें वास्तुकी पूजा और प्रार्थना करे 'ॐनमोभगवते वास्तुपुरुषाय कपिलाय ॥ ९२ ॥ पृथ्वीधराय देवाय प्रधानपुरुषाय च' इसप्रकार कहकर नमस्कार करे और कहे कि, समस्त गृह महल पुष्कर उद्यान आदि

The Unforgettable in hindi dubbed download download free

EdwardRossetEpubToPdf
happy days[Dual-Audio] [Telugu-Hindi]

Music MP3 Downloader 5.4.6.6 Download Pc

a178309ace Saat Uchhakkey Movies Hd 720p In Hindi

a178309ace

Burnout Paradise no cd Crack KeyGen
hyderabadmasterplan2020pdfdownload
brc sequent 24 software crack